हिंदी कविता

विषय : यहाँ एक नदी बहती थी ।

दूसरों केलिए . . . .

सदियों पहले बहती थी एक नदी,
जो सिर्फ और सिर्फ दूसरों केलिए ।
उसे अब नहीं दिखाई देती है,
इसलिए की मर गया दूसरों केलिए ।
कभी भी खुदगर्ज नहीं बना था.
शायद, इसलिए मर गई ।
पक्षियों को आदी जीवजालों को मानव
को सिर्फ प्यार किया था उसीने ।
शायद इसी लिए जान दी अपनी,
उसे मलिन किया मानव जाती ने
शायद इसीलिए उनकेलिए जान दी थी ।
जो सिर्फ और सिर्फ बहती थी दूसरों केलिए ।

क्या, कुसूर था उसका, की
प्यार किया उसने दूसरों को,
हाँ, शायद इसलिए ।
प्यार करने का नाटक करके धोखा
दिया उसे, जो सिर्फ प्यार करना
जानती थी ।
हमेशा प्यार करती हूँ बोलकर
मार डालती है उसे
लेकिन फिर भी बहती है दूसरों केलिए

एक जमाने पर बहती थी यहाँ
सरस्वती, भारतफुषा आदी,
लेकिन अब नहीं।
सिर्फ और सिर्फ मानव जाती
है उसकी विनाश का कारण।
मलिन करके निर्जीव बना डाला उसे।
कोई कुसूर नहीं थी उसका सिर्फ
अच्छा करता था सबकेलिए लेकिन,
एक दिन दूसरों केलिए जीते जीते मर गई।

क्या किया था वो जो ऐसा कर डाला
इतना जुल्म, अत्याचार वो भी उन
पर जो सिर्फ दूसरों केलिए बहती थी।
क्या जाने थे वह बेचार, क्या पता था
उन्हें, ऐसा मार डाला वो भी उन्हें जो
सिर्फ और सिर्फ प्यार करना जानता था।

सदीयों बाद हम कह सकता है ऐसा..
की यहाँ एक नदी बहती थी।
अब सिर्फ एक कहानी बनकर रह
गया वो, जिनको सिर्फ प्यार करना
आता था।
वह बहती थी सिर्फ दूसरों केलिए।
प्यारा, खुबसूरत थी वह शायद
इसलिए मार डाला उसे, जो
कभी दूसरों केलिए बहती थी।

उसकी जल का एक बूँद,
काफी होती थी सारी
बिमारी का निवारण केलिए ।
इसी नदी को बिना कोई खास
वजह से मार डाला ।
उसे पहले, धीरे - धीरे से
मार डाला और एक दिन,
अचानक इस दुनिया से ही गायब कर दिया ।
क्या कुसूर थी उसका, नदी की
उसने दूसरों केलिए जिया ?
इस दूसरों केलिए जीने से क्या यही मिलती है ?
हाँ, शायद यही मिलती हैं ।

इस दुनिया पर बहती थी
एक नदी . . . . . ।